भजन

तर्ज– दीवानों से ये मत पूछो

यह इश्क रब्द भी खूब हुआ,देखो हमपे क्या गुजरी है
माशूक के दिल में आशिक है,अब दोनों पे क्या गुजरी है

1–जिस इश्क रब्द में हम खुद ही, प्रीतम का इश्क गंवा बैठे
यह दुनियां वाले क्या जाने, हम दोनों पे क्या गुजरी है

2–है अरस परस हम दोनों ही, लेकिन नासूत में बैठे हैं
लेकर ये बेशक इलम मगर, शक में हमपे क्या गुजरी है

3–माशूक का रूतबा बड़ा है अगर,तुम जाहिर होकर ले जाओ
हम तड़पा करें तुम भी चुप हो,खामोशी में क्या गुजरी है

4–वह इश्क हमें अब लौटा दो,जो चाहत है तुम्हें निसवत की
मेहेबूब मेरे तुम देखा करो, माशूकों पे क्या गुजरी है